जीवन परिचय–

कवि कृपाराम खिडिया शाखा के चारण थे। इनके पिता का नाम जगराम जी था जो खराडी गाँव (वर्तमान पाली जिले में) के निवासी थे। सीकर नरेश देवी सिंह एवं उनके पुत्र राव राजा लक्ष्मण सिंह ने उनकी कवि प्रतिभा एवं विद्वता से प्रभावित होकर इन्हें क्रमशः महराजपुरा एवं लछमनपुरा गाँव की जागीर प्रदान की।

कृपाराम खिडिया का रचनाकाल संवत् 1864(वि0स0) के आसपास माना जाता है। इनकी रचनाओं में राजिया रा सोरठा (काव्य), चालकनेसी (नाटक) तथा एक अलंकार ग्रन्थ के नाम गिनाये जाते है।इनमें से राजिया रा सोरठा ही वर्तमान में उपलब्ध है।

राजिया रा सोरठा (ग्रन्थ) कवि ने अपने सेवक राजाराम (राजिया) को सम्बोन्धित कर लिखा है। राजाराम(राजिया) कवि का विश्वासपात्र एवं सेवाभावी सेवक था। राजाराम निःसन्तान था। इसलिए वह बहुत उदास रहता था की मरणोपरान्त कोई उसका नाम लेवा भी नहीं बचेगा। तब कवि ने उसे आश्वस्त किया की वह अपनी कविता द्वारा उसे अमर बना देगें की सारी दुनिया उसका नाम याद रखेगी। तब कवि ने राजिया को सम्बोन्धित कर नीति के सोरठे रचने शुरू किये। इसमें लगभग 140 सोरठे मिलते है।

राजिया रा सोरठा राजस्थानी भाषा में सम्बोधन नीति काव्य की प्रथम रचना मानी जाती है। इसमें डिंगल भाषा का प्रयोग हुआ है। सोरठा छंद है, तथा वैण सगाई मुख्य अलंकार है। इनकी सहजता, सरलता, एवं सरसता तथा प्रसादगुणयुक्तता के कारण 'राजिया रा सोरठा'' लोग समाज में बहुत प्रसिद्व है।

पाठ परिचय–

संकलित अंश में कवि ने हिम्मत एवं पराक्रम का महत्व सद– संगति का लाभ , आपदा से पूर्व प्रबन्धन के महत्व को स्पष्ट किया है। इनमें मानव जीवन में वाणी को महत्त्वपूर्ण बताते हुए सोच समझकर एवं मधुरवचन बोलने का उपदेश दिया गया है।कवि के अनुसार एक आदर्श समाज में गुणों की पूजा होनी चाहिए।इन सोरठों में कवि की विद्वता, बहुज्ञता एवं अनुभव की व्यापकता प्रकट होती है।

गुण अवगुण जिण गाँव, सुणै न कोई सांभलै।

उण नगरी विच नांव, रोही आछी राजिया।।1।।

कारज सरै न कोय, बल प्राक्रम हिम्मत बिनां।

हलकार्‌या की होय, रंगा स्याळां राजिया।।2।।

MK BAIRWA(LECTURER-HINDI)

शब्दार्थ––– सुणै–सुनता ।सांभलै–समझता ।रोही–निर्जन वन। आछी– अच्छी। कारज–कार्य ।सरै–सफल होना। प्राक्रम–साहस,पराक्रम ।हलकार्यां– ललकारने से। की –क्या। रंगा–रँगा हुआ। स्याळां–सियारों को।

व्याख्याः– कवि कहता है कि जिस गाँव या समाज में कोई भी गुण और अवगुण पर न ध्यान देता हो और न उन्हें समझ पाता हो, उस गाँव या समाज में रहने से तो निर्जन वन में रहना अच्छा है।

कवि कहता है कि जीवन में बिना बल और पराक्रम के किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती । जो रंगे सियार (पराक्रम को ढोंग करने वाले) हैं, उन्हें कितना भी ललकारो, या उकसाओ वे असफलता के भय से कभी आगे नहीं आते।

मिळे सींह वन मांह, किण मिरगां मृगपत कियौ।

जोरावर अति जांह, रहै उरध गत राजिया।।3।।

आछा जुध अणपार,धार खगां सनमुख धसै।

भोगै हुय भरतार, रसा जिके नर राजिया।।4।।

शब्दार्थः– सींह–सिंह। किण–किन। मिरगां–प्शुओं ने। मृगपत–पशुओं का राजा। जोरावर–बलवान ।अति–अत्यन्त ।जांह–जहां
भी ।उरध–ऊर्ध्व,ऊंचा ।जुध–युद्व ।खगां–तलवार ।हुय–होकर ।भरतार–स्वामी, राजा ।रसा–प्थ्वी,राज्य।

व्याख्याः– कवि अपने सेवक राजिया को सम्बोधित करते हुए कह रहा है कि बलवान और पराक्रमी लोग अपने पुरूषार्थ से उच्च स्थिति प्राप्त किया करते हैं तथा युद्व में तलवारों की धार का सामना करने वाले ही राजा बनकर पृथ्वी को भोगा करते है।

सिंह(शेर) को मृगपति अर्थात् पशुओं का राजा कहा जाता हैं किन्तु पशुओं ने कभी मिलकर उसे राजा के रूप में स्वीकार नहीं किया। वह तो अपने पराक्रम से पशुओं का राजा बना हुआ है। बलवान प्राणी जहाँ भी रहता है, ऊँचे स्थान पर सुशोभित रहता है।

युद्व में भाग लेना अच्छा हैं, गौरव की बात है। जब शूरवीर तलवारों की तीखी धार का सामना करते हुए आगे बढता है तभी वह पृथ्वी का स्वामी राजा बनकर उसे भोगता है। चुनौतियों का साहस के साथ सामना करते वाला व्यक्ति ही जीवन में उच्च स्थान पाता है।

इणही सूं अवदात, कहणी सोच विचार कर।
बे मौसर री बात, रूडौ लगै न राजिया।।5।।

M.K.BAIRWA (LECTURER-HINDI)

पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै।
प्रचँड हुआं विसवाव, रोभा घालै राजिया।।6।।

शब्दार्थ– इणही–इन ही। अवदात–अच्छी, हितकारी। कहणी–कहनी। बे मौसर री–असमय की,जो उचित नही। रूडी–अच्छी।पहली –पहले ही। उपाव–उपाय,जतन। दव–दावानल,आग। आमय–रोग। विसवाव–सँकट। रोभा–कष्ट। घालै–देता है।

व्याख्या– अच्छी या हितकारी बात भी व्यक्ति को सोच विचार कर ही करनी चाहिए क्योंकि बिना समय और अवसर का ध्यान रखे जो बात कही जाती है वह सुनने वालों को अच्छी नहीं लगती।

म्नुष्य को आग, शत्रु और रोग आदि संकटों से बचाव का उपाय पहले से ही कर लेना चाहिए। जब संकट भयानक रूप ले लेता है तो वह बहुत कष्ट देता है। संकट को बढने न देना और आरम्भ में ही उसका उपाय कर लेना अच्छा रहता है।आग जब बढ जाती है तो जन धन का विनाश करती है। शत्रु को बलवान हो जाने का अवसर देना मूर्खता का प्रमाण है।इसी प्रकार रोग का आरम्भ में ही उपचार करना चाहिए बढ जाने पर वह प्राणघातक तक हो सकता है।

हीमत कीमत होय, बिना हीमत कीमत नहीं।

करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूँ राजिया।।7।।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै।

कडवौ लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।8।।

शब्दार्थ :– हीमत–हिम्मत,साहस।कीमत–मूल्य,सम्मान,महत्व।रद–रद्दी।
कागद–कागज।रसना–जीभ,वाणी। काग–कौआ।

व्याख्याः– मनुष्य का मूल्य उसके साहस प्रदर्शन से ही प्रकट हुआ करता है। बिना साहस का परिचय दिये कोई उसको महत्व नहीं देता। चुनौतियों के सामने घबरा जाने वाले व्यक्ति को लोग रद्दी कागज की तरह ठुकरा देते है।

कोयल अपनी मधुर वाणी से सुनने वालों के मन में प्रेभभाव और प्रसन्नता भर देती है। किन्तु कौए की कर्कश काँव–काँव कानों को कडवी लगा करती है। यह मधुर और कटु वाणी का ही प्रभाव है।

दूध नीर मिळ दोय, हेक जिसी आकित हुवै।

करै न न्यारौ कोय, राजहंस बिना राजिया।।9।।

MY BARWA (LECTURER HINDI)

मलियागिर मंझार, हर को तर चंनण हुवै।

संगत लियै सुधार,रूंखा ही नै राजिया।।10।।

शब्दार्थ :– नीर–जल। हेक–एक। जिसी–जैसी। आकित–आकृति,रूप। हुवै–हो जाती है।न्यारौ–अलग अलग। राजहंस–एक जल पक्षी, जिसे दूध और पानी को अलग अलग कर देने वाला माना जाता है।मलियागिर–मलय गिरि नामक पर्वत जहाँ चंदन के वृक्ष उगते हैं। मंझार–मध्य मे।हर को– हर कोई, प्रत्येक। तर –वृक्ष। चंनण–चंदन।

व्याख्याः– कवि ने दूध और पानी का उदाहरण देकर समझाया है कि ज्ञानी और गुणवान व्यक्ति ही वस्तु के गुण और दोष को अलग करके दिखा सकते हैं। कवि कहता है कि दूध और पानी को मिला दिया जाता है तो दोनों के मिल जाने पर एक जैसा रूप हो जाता है। पानी भी दूध जैसा दिखाई देता है। दूध और पानी को अलग अलग कर दिखाने का गुण केवल राजहंस में ही होता है। कोई और यह कठिन कार्य नहीं कर सकता।

मलय गिरि पर्वत पर चंदन के वृक्ष उगा करते हैं किन्तु उनके साथ उगने वाले अन्य वृक्षों में भी चंदन जैसे ही गुण आ जाते है।यह सत्संग की महिमा है।चंदन का संग करने से अन्य वृक्षों ने अपने को सुधार लिया, वे भी चंदन जैसे ही हो गए।

पाटा पीड उपाव, तन लागां तरवारिया।

वहै जीभ रा घाव, रती न ओखद राजिया।।11।।

मूसा नै मंजार, हित कर बैठा हेकण।

सह जाणै संसार, रस नह रहसी राजिया।।12।।

शब्दार्थः– उपाव–चिकित्सा, उपाय। तरवारिया–तलवार। बहै–बहता रहता है, ठीक नहीं होता। जीभरा–बोली का। रती–तनीक। ओखद–दवा,औषधि। मूसा–चूहा। मंजार–बिल्ली। हित–मित्रता। हेकण–बिना सोचे समझे। सह–सब,सारा। रस–सुख,मित्रता का आनंद।

व्याख्या– कवि कहता है कि तलवार के प्रहार से शरीर पर हुए घाव का और अन्य चोट आदि को ठीक करने के उपाय तो हैं, किन्तु कठोर या अपमानजनक वाणी से हृदय में जो घाव होता है, उसे ठीक करने वाली कोई औषधि नहीं हैं यह मन में हो जाने वाला घाव सदा ही बहता रहता है, कष्ट दिया करता है।

मित्रता समान स्वभाव वालों के बीच ही सफल और सुखदायिनी हुआ करती है। यदि कोई चुहा बिल्ली से मित्रता कर बैठे तो उसका परिणाम कभी सुखदायी नहीं हो सकता। सारा संसार इस बात को जानता है। चूहा बिल्ली का भोजन है। वह अपने बल पर बिल्ली से

अपनी रक्षा नहीं कर सकता। मतभेद हो जाने पर बिल्ली उसे खा जाने में तनिक भी देर नहीं लगाएगी।भावार्थ यह है कि समान स्वभाव वाले से ही मित्रता निभ सकती है।

खळ गुळ अण खूंताय, एक भाव कर आदरै।

ते नगरी हुंताय, रोही आछी राजिया।।13।।

घण घण साबळ घाय, नह फूटै पाहड निवड।

जड कोमळ भिद जाय, राय पडै जद राजिया।।14।।

शब्दार्थ– खळ–तेल निकालने के पश्चात् बची तलछट जो पशुओं को खिलाई जाती है। गुळ–गुड।खूंताय– भूसी छानन। आदरै– सम्मान करें, स्वीकार करें। रोही–निर्जन वन। घण घण– घने, बहुत से। साबळ–सब्बल, हथौडा। निवड–कठोर। भिद जाय– प्रवेश कर जाती है। राय– दरार।

व्याख्या– कवि कहता है कि जिस नगर या समाज में खल, गुड, अन्न आदि को एक समान महत्त्व दिया जाता हो,वहाँ नहीं रहना चाहिए। वह स्थान तो अँधेरी नगरी जैसा है। वहाँ गुणवान व्यक्ति का कभी भी अपमान या उपेक्षा हो सकती है। ऐसे समाज में रहने से तो निर्जन वन में जाकर निवास करना अच्छा है। वहाँ व्यक्ति आत्मसम्मान के साथ तो रह सकता है। ऐसे लोगो के बीच नहीं रहना चाहिए जो '' सब धान बाईस पँसेरी–– तौलते है। जिन्हें व्यक्ति या वस्तु की परख नहीं होती।

कवि कहता है कि सब्बल या बडे हथौडे से प्रबल चोट किए जाने पर भी जो कठोर पर्वत नहीं फूट पाता उसी पहाड में दरार पड जाने पर पौधे की कोमल जड भी सहज ही उसके भीतर प्रवेश कर जाती है। अति सुरक्षित दृढ दुर्ग हो, चाहे राज्य या परिवार, दरार अर्थात् फूट पड जाने पर साधारण शत्रु भी उसमें प्रवेश करके उसे हानि पहुँचा सकता है। फूट या परस्पर अविश्वास से बचने का संदेश दिया गया हैं । लंका जैसा दृढ और सुरक्षित दुर्ग भी फूट के कारण रावण और राक्षसों की रक्षा नहीं कर पाया।

पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये।

उर कडवाई आक, रंच न मुकै राजिया।।15।।

शब्दार्थ :– पय– दूध या जल। पाक–पकाओ, पागो। इमरत–अमृत। उर–हद्य।आक–अकौआ का पौधा,मदार। रंच–तनिक भी। मुकै–कम नहीं होती है।

व्याख्या:– कवि कहता है कि आक या मदार को मीठे पानी या दूध में पकाओं, उसे शक्कर में पाग लो अथवा उसे अमृत से सींचते रहो। इन सब उपायों से उसके भीतर का कडवापन तनिक भी कम नहीं हो सकता। भाव यह हैं कि जो स्वभाव से ही ईर्ष्या करने वाले या कुटिल लोग हैं, उन्हें सुधारना या मधुर स्वभाववाला बनाना सम्भव नहीं है।

M.K.BAIRWA (LECTURER-HINDI)